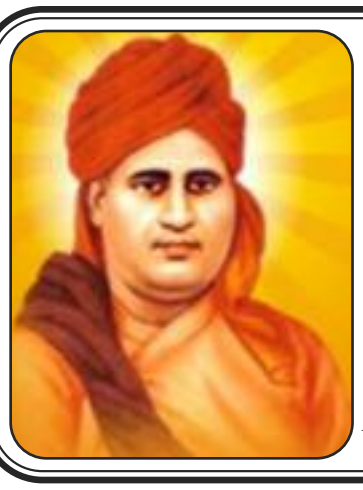

आर्योदय

ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Aryodaye No. 299 ARYA SABHA MAURITIUS 23rd *Nov. to 20th Dec. 2014*

ओ३म् ।। ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत् ।
तेन त्यक्तेन भुञ्जथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ।।

येजुर्वेद ४०/१

Om! Ishā vāsyamidam sarvam yatkincha jagatyām jagat.
Téna tyakténa bhunjithā mā gridhaha kasya swidhanam.

Yajur Veda 40/1

Glossaire / Shabdārtha

Ishā – ("Ishwar, Parmātmā" en Hindi) Dieu.
Vāsyam – habite, demeure, est présent ou se trouve partout, est omniprésent et pénétrant tout.
Idam – tout ce que nous voyons autour de nous et tout ce qu'il y a dans le monde.
Sarvam – de toute part, partout, entièrement.
Yatkincha – Il y a la présence de Dieu dans tout ce qu'il y a dans le monde.
Jagatyām jagat - Le monde n'est pas statique mais dynamique, c'est-à-dire, en évolution constante.
Téna tyakténa bhunjitha : Il faut que l'on sache gérer ou jouir de tout ce qu'il y a dans ce monde avec beaucoup de discrétion.
Ma gridhaha – penser à ne pas être avide ou gourmand et à ne pas convoiter les biens d'autrui.
Kasya swidhanam – A qui appartient tout ce qu'il y a dans le monde ?
Rien au monde n'appartient à l'homme.
C'est Dieu, Notre Seigneur, qui en est le Maitre Absolu.

cont. on pg 2

N. Ghoorah

स्वामी शिवशंकर एम०बी०ई० -- पहली आर्य संन्यासिनी

१४ दिसम्बर को बेलमार के डा० चिरंजीव भारद्वाज आश्रम में स्वामी शिवशंकर जी की नब्बेवीं वर्षगाँठ मना रहे हैं। उस अवसर पर वृहद् यज्ञ से कार्यारम्भ होगा। गण्यमान्य जनों द्वारा स्वामी जी के जन्म-दिवस के उपलक्ष्य में शुभकामनाएँ प्रस्तुत की जायेंगी। अन्त में सहभोज होगा ।

इस वर्षगाँठ की मंगल बेला में डॉक्टर इन्द्रनाथ जी का लेख हमारे सुधी पाठकों के लिए बड़ा ही लाभकारी है। लीजिए इसे ध्यान से पढ़िए।

डा० उदय नारायण गंगू

सदियों से जड़ पकड़ी हुई **'स्त्रीशूद्रौनाधीयताम्'** धारणा को सबसे पहले आर्य समाज ने निर्मूल साबित किया था। लड़कियों और स्त्रियों को पढ़ने को अधिकार नहीं दिया जाता था और शूद्र परिवार में जन्म लेने वालों को वेद व अन्य धर्मग्रन्थों को छूने तक भी नहीं दिया जाता था और कहा जाता था कि उनके हाथों से छूने से ये धर्म-ग्रन्थ अपवित्र हो जाएँगे। कितना बड़ा अन्धविश्वास था। कितने माता-पिता भी वैसी गलत धारणा के वशीभूत होकर शिकार हुए। अपनी बेटियों को शिक्षा पाने से वंचित रखा और निम्न वर्ण के लोग अशिक्षित रह गए ।

कन्या और नारी शिक्षा का प्रचलन सबसे पहले आर्यसमाज ने किया। उसीके प्रतिफल स्वरूप विदुषी नारियाँ पैदा हुईं, समाज सेविकाएँ पैदा हुईं और गर्व की बात है कि उसी संदर्भ में पैदा हुई मॉरीशस की पहली आर्य स्वामी श्रीमती लाचो शिवशंकर। श्रीमती लाचो शिवशंकर पहली हिन्दू महिला हैं, जिन्हें मॉरीशस सरकार की ओर से प्रधान मंत्री सर शिवसागर ने एम०बी०ई० (M.B.E.) की उपाधि से विभूषित किया था ।

श्रीमती लाचो का जन्म १५ दिसम्बर १९२४ में क्रेवकेर के 'फूलवा मोंताईं' नामक ग्राम में हुआ था। माँ-बाप गरीब थे। स्कूल पढ़ने न जा सकीं । पर हाँ, गाँव में एक हिन्दी पाठशाला थी, जहाँ सायंकालीन हिन्दी की पढ़ाई होती थी । वहीं वे हिन्दी पढ़ने जाती

शेष भाग पृष्ठ २ पर

सम्पादकीय

२०१४ का अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन

एक देश में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन का आयोजन अपना विशेष महत्व रखता है। इस प्रकार के भव्य आयोजन से आर्य सदस्यों में जागृति पैदा होती है। प्रसुप्त समाजों में पुनः नई चेतना जाग उठती है। शिथिल समाजों के अधिकारियों को निस्वार्थ भाव से तप-त्याग करने की उत्प्रेरणा प्राप्त होती है। विश्व के विभिन्न देशों के पधारे हुए प्रतिनिधियों को अपने देश में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित करने की प्रेरणा प्राप्त होती है।

इस वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के भरपूर सहयोग से सिंगापुर तथा थाईलेण्ड बेंकोक शहर में प्रथम वार अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन आयोजित किया गया था, जिस में भाग लेने के लिए भारत, अमेरिका, इंग्लेण्ड, मॉरीशस आदि के लगभग साढ़े तीन सौ आर्य प्रतिनिधि अपना कर्तव्य समझ कर सम्मलित हुए थे। उन प्रतिनिधियों में अनेक साधु-संत, महात्मा और दिग्गज विद्वान् पधारे हुए थे। उनमें से मैं निम्न महापुरुषों का नाम लेना अपना कर्तव्य समझता हूँ – स्वामी देवराज शास्त्री जी, स्वामी ऋजस्पति जी, स्वामी आनन्द जी, स्वामी सुमेधानन्द जी, आचार्य ज्ञानेश्वर जी, श्री धरमपाल 'आर्य' जी, डा० धरमपाल जी, डा० विभाकाले जी, श्री गंगाप्रसाद जी, श्री भूवनेश कोसला जी, आचार्य राजपाल जी, डा० सोमदेव शास्त्री जी, श्री नरेन्द्र शास्त्री जी, डा० सत्यकाम वेदालंकार जी, श्री विनय आर्य जी, श्री प्रकाश आर्य जी तथा अमेरिका से डा० सतीश प्रकाश जी। इन महानुभावों के अलावा अनेक कर्मठ आर्य प्रतिनिधि इस वर्ष के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलनों में पधारे हुए थे, जिनसे महासम्मेलन की शोभा अधिक बढ़ गई थी।

सिंगापुर में दिनांक १ और २ नवम्बर को योग, साधना, ध्यान और यज्ञ से प्रवचनों, भजनों, आलेखों की प्रस्तुति हुई थी तथा आदि सांस्कृतिक गतिविधियों का भव्य आयोजन किया गया था, जिसमें भाग लेने के लिए लगभग पाँच सौ आर्य प्रतिनिधि दोनों दिन उपस्थित थे। उस भव्य आयोजन के प्रति हम सिंगापुर आर्य समाज के प्रधान श्री ओ३म् प्रकाश राय जी तथा उनके सहयोगियों के प्रति अति आभारी हैं।

हम पूरे विश्वास के साथ कह सकते हैं कि सिंगापुर के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन से प्रभावित होकर वहाँ आर्य महिला समाजों एवं आर्य युवक संघ की शाखाएँ शीघ्र ही खोली जाएँगी और आर्य समाज का आंदोलन बड़ी तीव्रता के साथ होगा।

दिनांक ८ और ९ नवम्बर २०१४ को दूसरा महा-सम्मेलन थाईलेण्ड के बैंकोक शहर में आयोजित किया गया था, वहाँ पर भी विदेशी और स्थानीय आर्य प्रतिनिधि विराजमान थे। जहाँ पर भी योग, साधना, ध्यान तथा यज्ञ द्वारा कार्यक्रमों का शुभारम्भ किया गया था। प्रकाण्ड विद्वानों के संदेश हुए थे। साधु-संतों के आशिष वचन हुए थे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रस्तुतीकरण भी हुआ था। जिनसे प्रेरित होकर थाईलेण्ड का बेंगकोक शहर जगमगा उठा था, वहाँ आर्य समाज में वैदिक-धर्म की सत्य किरणें जाग उठी थीं। वहाँ के आयोजन में यद्यपि कुछ कमी महसूस की जा रही थी, फिर भी उन आर्य-बन्धुओं में वैदिक-धर्म के प्रति श्रद्धा दिखाई दे रही थी। हम बैंगकोक आर्य समाज के प्रधान श्री सिंग जी के अद्वितीय सहयोग के प्रति अपना आभार प्रकट करते हैं ।

उन दोनों आर्य महा सम्मेलनों में सम्मिलित होने के लिए आर्य सभा की ओर से ७४ आर्य प्रतिनिधि पधारे हुए थे। हमारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है कि हमें उन दो देशों के धर्म, संस्कृति, सभ्यता, भाषा आदि से परिचित होने का अवसर प्राप्त हुआ था। दोनों देशों में भ्रमण करने का मौका भी मिला था। साथ ही अति प्रसन्नता की बात यह है कि आर्य सभा के वरिष्ठ पुरोहित पंडित यशवंतलाल चुरोमुणि जी तथा श्रीमती चुरोमुणि जी को सिंगापुर में यज्ञमान बनने का भाग्य प्राप्त हुआ था। आर्य सभा के प्रधान श्री बालचन्द तानाकूर, उपप्रधान श्री सत्यदेव प्रीतम जी, महा मन्त्री श्री हरिदेव रामधनी जी तथा श्रीमती करीमन जी को अपना संदेश देने का शुभावसर प्राप्त हुआ था। दोनों आर्य महा सम्मेलनों में पंडित श्याम दयबू जी तथा हमारे देश के प्रसिद्ध गायक श्री ग्यान महिपत लाल तथा साथियों द्वारा मनमोहक भजन प्रस्तुत करने का मौका मिला था, जिनके भजनों से श्रोतागण हर्षित हो उठे थे।

सभी मॉरीशसीय प्रतिभागियों की देखभाल में आर्य सभा के उपमन्त्री श्री राजेन्द्रप्रसाद रामजी जी और श्री गिरजानन्द तिलक तथा अन्य सदस्यों ने पूरा सहयोग दिया था।

हमारी विदेश यात्रा में किसी प्रकार की समस्याएँ उपस्थित नहीं हुई थीं। हमारी यात्रा सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई। हम उन दोनों आर्य महासम्मेलनों से अति प्रभावित हुए और हमें निस्वार्थ भाव से सामाजिक सेवाएँ करने की प्रेरणाएँ प्राप्त हुईं। दीर्घकाल तक हमारे हृदय-पटल पर उन सम्मेलनों की स्मृति अमिट बनकर रहेगी ।

बालचन्द तानाकूर

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

सत्यदेव प्रीतम,सी.एस.के,आर्य रत्न - उपप्रधान आर्य सभा मॉरीशस

पिछले कुछ वर्षों से लगातार साल दर साल विश्व के किसी न किसी देश में आर्य महासम्मेलन आयोजित होता आ रहा है। कभी भारत में, कभी संयुक्त राज्य अमेरिका में, कभी होलेण्ड में, गत साल दक्षिण अफ्रिका के भारतीय बाहुल्य शहर डर्बान में और इस वर्ष पहली बार के लिए दक्षिण पूर्व एशिया के दो देशों में। १ और २ नवम्बर के दूसरे सप्ताहान्त ८ और ९ को थाई देश की राजधानी बैंगकोक में रखा गया था।

सदा की तरह मॉरिशस से ७५ लोगों का एक शिष्ट प्रतिनिधि मण्डल आर्य सभा के पाँच अन्तरंग सदस्यों की सरपरस्ती में, अन्तर्राष्ट्रीय सर शिवसागर रामगुलाम हवाई अड्डे से,एम० के० ६४७ ने उड़ान भरी और लगभग सात घण्टे बाद मलेशिआ के हवाई अड्डे पर उतरा। क्वाललांपुर हवाई अड्डे के भव्यता को देखकर हमारे सभी सदस्य दाँतों तले उँगली दबाने लगे। वहाँ से सीधे हम पहुँचे पूर्व आरक्षित होटल में जहाँ पर हमारे एजेंट ने अच्छी व्यवस्था कर रखी थी। थकावट दूर करने के लिए हम सभी ने स्नान करके तरोताज़गी महसूस की।

२८ नवम्बर को शेष दिन समूह में भ्रमणार्थ निकले। मलेशिया के भौतिक प्रगति को आँखों को यकीन न हो रहा था कि इतने कम वर्षों में एक अविकसित देश इतनी लम्बी छलांग भर सकता है। मलेशिया की कुल आबादी १६० लाख (१६ मिलियन) की है। मलेशिया के लोग देखने में चीनीनुमा लोग हैं पर चीनी समुदाय के किसी भी प्रकार की समता नहीं। न रीति रिवाज़ और न चीनी संस्कृति से। वहाँ की भाषा माले है। कठिनाई हमें तब हुई जब मोटर चालक या होटल के कर्मचारी अंग्रेज़ी नहीं बोल पाते थे।

क्वालालंपुर में दो दिन बाकी रह गये थे। उनसे फ़ायदा उठाकर २९ अक्टूबर को जेन्टिंग हाई लैण्ड (Genting Highland) और बाटू केव का दौरा किया। बाटू केव (Batu Cave) एक तमिल कोविल है जो एकदम से ऊँचाई पर दिखाई देती है। ऊपर पहुँचने के लिए १२८ सीढ़ियाँ हैं। बहुत सावधानी से पैर दबा दबा कर चढ़ना होता है। असावधनी से गिरेंगे तो नीचे चले आयेंगे। वहाँ से Genting Highland पहुँचे। वह जगह देखते बनती है। उत्तनी ऊँचाई पर बड़े-बड़े भवन खड़े किये गये हैं। उन्हें देख कर आश्चर्य की सीमा नहीं रहती। अगले दिन ३० अक्टूबर को चोकोलेट फाक्ट्री देखने गये। Chocolate Factory में अनेक किस्म के फ्लेवर वाले चोकोलेट बनते है। खूबी यह है कि मधुमेह से पीडित व्यक्ति भी उसका मज़ा ले सकता है।

३१ अक्टूबर को सुबह तड़के हम कोछ द्वारा सिंगापुर के लिए खाना हुए जहाँ १ली और २री नवम्बर को मेगा कोन्फेरंस लगने वाला था।

३ नवम्बर को सुन्दर 'दृिश्यों के दर्शण करते हुए हम सेन्तोज़ा हाईलेण्ड (Sentosa Highland) देखने गये। उसकी सुन्दरता अभूतपूर्व है। उसे देखने के लिए संसार भर के लोग आते हैं। मॉरिशस का क्यूरपीप नगर जो ऊँचाई पर स्थित है यह तो सेन्तोज़ा हाईलैण्ड के सामने कुछ भी नहीं। उतनी ऊँचाई पर जो दुकान है, कासिनो है और जो दर्शनीय चीज़ें हैं वे सब मनबहलाव के लिए बनायी गयी हैं।

४ नवम्बर को हम पुनः हवाई मार्ग बैन्कोक आये और वहाँ से मलेशिया के दूसरे बड़े शहर पताया में आकर डेरा डाला और वहीं रात बितायी। जैसे कि हमें पता कराया गया, पताया की आबा की लगभग २ मिलियन की है। ५, ६ और ७ नवम्बर को हमने निम्न स्थानों के दर्शन किये – नोनचोंग गार्डेन, आल्काज़ार शो, फ्लोटिंग मार्केट और अन्त में बैंकोक का सफ़ारी और वोर्ल मारिन।

८ & ९ को बैंगकोक में मेगाकोन्फेरेन्स आटेंन किया। ९ की शाम को सम्मेलन के बाद फिर से एक बार सैर की और ११ को हमने हवाई जहाज लिया और ११ ही की शाम को हम मॉरिशस वापस आ गये।

सब मिलाकर हमारी यात्रा अति सफल रही। कोई भी अप्रिय घटना नहीं घटी। मामूली सरदी-खांसी तो विदेश यात्रा के दौरान साधारण बात है।

मॉरिशस के प्रतिनिधि मण्डल ने एक अच्छा प्रभाव छोड़ा और उन देशों से हम एक अच्छी याद लेकर वापस आये जो वर्षों तक नहीं मिटेगी।

---

cont. from pg 1

Interprétation / Anushilan

C'est le premier verset (mantra) du quarantième chapitre du Yajur Veda. Ce chapitre, qui fait aussi partie de onze « Upanishads » authentiques, a été dénommé « Ishopanishad » par les sages et préconise « La Philosophie Védique de la vie de l'homme sur la terre » – sa relation avec Dieu et la nature, sa vie spirituelle et ses devoirs (envers sa famille, la société et son pays). Tout ceci le mène vers son salut, voire son but ultime de la vie.

L'étude de ce verset nous interpelle tous sur une question très pertinente concernant la vie de l'homme sur la terre et de ses devoirs. Nous pensons que cela mérite réflexion pour que l'on puisse arriver à une réponse subtile.

Chaque individu, dès sa naissance, jouit de tout ce qu'il y a dans ce monde merveilleux comme acquis ou comme ses biens personnels.

Hélas ! C'est une erreur grave.

Il faut que chaque personne se pose les questions suivantes, réfléchit mûrement et cherche les réponses appropriées : --

(i) A qui appartient ce monde et tout l'univers?
(ii) Qui l'a créé?; (iii) Où est-il ce créateur?;
(iv) D'où et de qui proviennent toute la nourriture, tous les autres ingrédients utiles (les diverses éléments) et toute la richesse que l'on a à notre disposition pour subvenir à nos besoins et de jouir du reste comme bon nous semble ;
(v) Qui est responsable de tous ces phénomènes?

La réponse des Vedas

Certainement il y a quelqu'un pour déclencher tous les processus car rien ne peut s'activer automatiquement sans qu'il y ait quelqu'un responsable pour le mettre en action, mais il n'est pas visible. Cependant l'on constate sa présence, son savoir-faire, son ingéniosité et sa puissance partout à travers toutes ses manifestations et ses bienfaits pour le salut de tout le monde.

Il est le Créateur de l'univers, le contrôle et maintient une discipline parfaite pour préserver l'équilibre et l'harmonie dans la nature. Il est omniprésent et pénétrant tout, c'est-à-dire, il est présent dans l'univers tout entier. Il est une force invisible et suprême qui a le pouvoir de gérer le cosmos.

C'est Dieu, Notre Seigneur, Tout-Puissant qui est unique au monde.

Ainsi tout les croyants (« God-fearing people » en Anglais) savent pertinemment bien qu'il y a un seul Dieu et Il est le Maître Suprême de l'univers.

Ils savent aussi que rien n'est statique ou stationnaire dans ce monde. Tout est dynamique (en mouvement), c'est-à-dire en évolution perpétuelle. Chaque atome ou particule infinie est en action.

Etant Omniprésent et Pénétrant Tout, Le Seigneur est aussi Omniscient. Ainsi Il nous accorde tous une attention soutenue et Il est au courant de toute notre pensée, de notre état-d'esprit, de nos agissements aussi bien que nos bonnes actions. Rien n'échappe à l'attention du Seigneur.

De telles personnes savent aussi à travers l'enseignement des Vedas que Le Seigneur, qui a établi une discipline sans faille pour le bon fonctionnement du monde et de l'univers, a aussi préconisé un code d'éthique et des normes pour permettre à l'homme de jouir de tout ce qu'il y a dans ce monde avec modération.

Pour guider l'homme sur la bonne voie il a prescrit "5 yajnas" – (prières et actions) au quotidien, Il y recommande aussi que tout ce qu'un homme gagne par sa labeur, il doit garder une partie pour accomplir ses « 5 yajnas », une partie pour faire la charité et garder le reste pour sa consommation et son propre usage.

De telles personnes, sachant que rien ne leur appartient au monde, ne convoitent jamais les biens d'autrui. Elles ne s'engagent pas dans la voie de la malhonnêteté, du banditisme, de l'escroquerie, de l'avidité ou de la violence envers leurs prochains pour l'acquisition de la richesse, des biens ou autres gains.

Elles mènent une vie vertueuse et spirituelle où il y a une culture de la persévérance, de la tolérance, de la générosité, de l'honnêteté, de la justice et de la magnanimité.

Elles adoptent un tel comportement dans leur vie parce qu'elles arrivent à comprendre que tout ce qu'il y a dans ce monde appartient au Seigneur et qu'elles ne possèdent rien, car elles doivent tout délaisser sur la terre quand elles vont mourir. Ainsi elles gèrent ou jouissent de tout dans ce monde avec abnégation.

Conséquemment ces croyants se transforment en sages ou en ascètes, et par la bénédiction du Seigneur ils atteignent le but ultime de la vie de l'homme sur la terre. C'est le Bonheur Suprême ou La Félicité Eternelle ('Moksha' en Hindi).

पृष्ठ १ का शेष भाग

थीं। उनके प्रथम गुरु श्री नेमनारायण गुप्त जी थे।

लावेनिर, सें प्येर में श्री मोहनलाल मोहित जी एक पाठशाला में हिन्दी पढ़ाते थे। दूर से भी लोग उनके यहाँ हिन्दी पढ़ने जाते थे। लाचो जी के दो भाई क्रेवकेर से उनके यहाँ हिन्दी पढ़ने जाते थे। वे पढ़कर आते तो लाचो जी को पढ़ाते थे। श्री मोहित जी संध्या सिखाते थे और सद्व्यवहार की अच्छी-अच्छी बातें सुनाते थे। वे संध्या-हवन सिखाते हुए वैदिक धर्म की शिक्षा भी देते थे।

एक दिन लाचो के भाई मोहित जी से मिलाने उसे अपने साथ ले गए । लाचो जी मोहित जी और उनकी पत्नी दोनों से मिली थीं। वे छोटी थीं, पर मोहित जी से बहुत प्रभावित हुई थीं और आगे चलकर उनपर उनका अच्छा संस्कार पड़ा। फिर लाचो जी ने बृजनाथ माधो जी से भी हिन्दी पढ़ी। पहले लाबूर्दोने में फिर प्लेन देरोश में वे पढ़ाते थे। दोनों स्थानों पर उनसे हिन्दी सीखी।

उस समय आर्य समाज के आंदोलन से कन्या पाठशालाएँ गाँव-गाँव में खुलने लगी थीं । पं० काशीनाथ किष्टो को हिन्दी पाठशालाएँ खोलने की भारी लगन थी। वे गाँव-गाँव में जाकर लड़कियों को पढ़ने के लिए माता-पिताओं को प्रेरित करते थे। नाम था – 'कन्या पाठशाला', पर लड़के भी वहाँ पढ़ने जाते थे। यदि लड़कियों को पढ़ने को प्रेरणा न मिली हुई होती तो आज श्रीमती लाचो शिवशंकर भी अनपढ़ रह गई होतीं।

उस समय बात विवाह के प्रचलन होने से लाचो का विवाह १३ वर्ष की कच्ची उम्र में प्लेन्देरोश के श्री शिवशंकर जी से हुआ था। कुछ अचरज सा लगता है कि उन्होंने २० बच्चों को जन्म दिया अर्थात् वे २० बच्चों की माँ बनीं। १९ लड़के हुए और सिर्फ़ एक लड़की। बाल्यकाल में ही पुत्री चल बसी। अभी लाचो जी के ९ लड़के जीवित हैं। एक पुत्र तो डाक्टर हैं, जो अस्पताल में सेवा-रत हैं और अन्य बेटे-बहुएँ सब सरकारी नौकरी में हैं।

सोचिए उस गरीबी के ज़माने में उतने बच्चों का लालन-पालन कितनी कठिनाइयों से हुआ होगा। लाचो जी और उनके पति को कितना कष्ट उठाना पड़ा होगा। गृहस्थ-जीवन की गाड़ी को चलाना सरल काम नहीं है। उतने कष्ट झेलते हुए भी श्रीमती लाचो शिवशंकर सामाजिक कामों में सक्रिय भाग लेती रहीं । महात्मा आनन्द भिक्षु ने रिव्येर जी राँपार में नगर-कीर्तन कराया था तो लाचो जी ने भाग लिया था और वैदिक धर्म की ओर अग्रसर हुई थीं। बाद में श्री सुखू रामप्रसाद, स्वामी विद्यानन्द विदेह तथा पं० वेदपाल के धर्मप्रचार का प्रभाव उनपर पड़ा। महिलाओं के उत्थान के लिए वे कुछ करना चाहती थीं। अशिक्षित महिलाओं को पढ़ाना चाहती थीं। वे चाहती थीं कि महिलाएँ भी समाज में उठ-बैठ करें, यज्ञ-हवन में भाग लें । विद्वानों के भाषणों को सुनें, अच्छी गृहणी बनें । इन बातों को ध्यान में रखकर उन्होंने गाँव की महिलाओं को जुटाकर एक महिला समाज की स्थापना सन् १९४५ में किया, जहाँ महिला उत्थान का विचार-विमर्श होता था।

पं० रामलगन रामरूप जी, जो कि प्लेन देरोश ही के निवासी थे, लाचो जी उनके सम्पर्क में आईं, उनसे उन्हें कई सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक बातें सीखने का अवसर मिला । तब पंडित जी के विचार-विमर्श कर उनके द्वारा स्थापित महिला समाज को आर्य महिला समाज नाम दिया गया । वह समाज आज भी सक्रिय है और उसकी सदस्याएँ बड़ी निष्ठा से सामाजिक और धार्मिक कार्यों में भाग लेती हैं ।

श्रीमती शिवशंकर जी ने पं० रामलगन जी से हवन करने को सीखा और बाद में उनके पुत्र पं० रामदेव रामरूप से भी ज्ञान प्राप्त किया। हारमोनियम बजाना भी सीखा। वे बड़े श्रद्धा-भाव से यज्ञ करती हैं और धर्मोपदेश से महिलाओं और पुरुषों में भी अच्छा संस्कार भरती हैं।

श्रीमती लाचो जी आर्य महिला मण्डल की कर्मठ समाज सेविकाओं, जैसे श्रीमती लखावती हरगोबिन, श्रीमती सौभाग्यवती पावाकेल, श्रीमती सुदेवी भीमा तथा माता जशोदा दशरथ के भी सम्पर्क में रहीं और उनसे प्रेरणा पायी ।

श्रीमती शिवशंकर को एक कर्मठ समाज सेविका जानकर राजनीतिक लोग भी उनसे मिलने आते थे। आप चुनावों के अवसर पर डा० शिवसागर रामगुलाम ने मज़दूर दल को अपना समर्थन देने को उनसे कहा था। अपने समर्थ अनुसार उन्होंने लेबर पार्टी को अपना समर्थन दिया। चुनाव में जीत होने पर डा० रामगुलाम ने उन्हें उनके सहयोग के लिए एम.बी.ई. की उपाधि से विभूषित किया । श्रीमती लाचो पहली हिन्दू महिमा हैं, जो इस उपाधि से विभूषित हुई हैं।

श्रीमती लाचो जी अपने स्थान पर यज्ञ-हवन, सत्संग, महायज्ञ भी करती रही हैं। विद्वान् लोग संन्यासी, पंडितगण, माता उषा शर्मा आदि आती रहती थीं। अब उनकी उम्र ढल गई है। वे ९० साल की हो गई हैं । अब वे साधना-भक्ति में अपना अधिक समय बिताती हैं।

श्रीमती लाचो शिवशंकर जी ने मॉरीशस की पहली आर्य स्वामी बनकर देश की अन्य आर्य पंडिताओं, आर्य महिलाओं के लिए पथ-प्रदर्शन किया है। मार्ग दर्शन पाकर आगे भी हमारे देश में इनकी जैसी धर्म प्रचारिका संन्यासिनियाँ हों और वैदिक धर्म की शान बढ़ायेंगे ।

स्वामी शिवशंकर जी गीत भी लिखती हैं । प्रस्तुत है उनका लिखा हुआ एक गीत –

एक ही धर्म एक ही व्रत नेमा
काया, वचन, मन पति पद प्रेमा
यही कथन सती अनुसार का
उस पवित्र कथन को निभाओ
पतिव्रत धर्म अपना लो।
सती सावित्री पति-सेवा में
पाया अमर पढ़ इतिहास में
करो पति-सेवा मिलेगा तुझे मेवा
आदर्श उनका भुलाओ।
पतिव्रता धर्म अपना लो ।
नारी धरम एक है पति-पूजा
उससे बढ़कर और न दूजा,
यही कहानी सती नर्मदा की
उनका आदर्श दिल में बसाओ ।

डॉ० इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ

एक जागरूक समाज

बालचंद तनाकुर जी

आर्य सदस्यों के तप-त्याग, एकता, सहयोग दान और निस्वार्थ सामाजिक सेवाओं के बल पर एक समाज जाग्रत रहता है। उन सभी कर्मनिष्ठ सज्जनों तथा समाज-सेवियों के पुरूषार्थ से समाज की उन्नति होती रहती है। उन्ही के पूरे सहयोग से सामाजिक संस्थाएँ जीवित रहती हैं।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह अकेला अपनी जीवन-यात्रा नहीं कर सकता है। उसे अन्य लोगों की सहायता, सहयोग और सेवा आवश्यक होती है। इसी कारण कंगाल, धनी, मूर्ख, विद्वान बलशाली या निर्बल सभी प्रकार के लोगों को अपने समाज से अटूट नाता जोड़ना चाहिए। जो व्यक्ति इस विचार धारा से अपने समाज को जागरूक रखते हैं, उनका समाज मानव उत्थान करता हुआ दीर्घ-जीवी रहता है।

हमारे ही एकमत और एक्यबल के आधार पर हमारा समाज दीर्घकाल तक जीवित रहता है और अपना प्रभाव आस-पास के गाँवों में डालता हुआ प्रसिद्धि प्राप्त करता जाता है। जिन आर्य सदस्यों में स्वार्थ की भावना उत्पन्न हो जाती है, वे अपने हित के लिए समाज को शिथिल बना देते हैं। ऐसे चन्द स्वार्थ और पद-लोलुप अज्ञानियों के निकृष्ट कर्मों से एक जागृत समाज में शिथिलता आ जाती है और वह अभागा समाज अल्पकाल ही में लुप्त हो जाता है, इसीलिए हर एक सदस्य का परम कर्त्तव्य है कि वह अपना अनुभव बाँटता हुआ अपनी सामाजिक संस्था की रक्षा करें।

आर्य सभा एवं मोका आर्य ज़िला परिषद् को बड़ा ही गर्व है कि मोका प्रान्त में नुवेल देकुवेर्त आर्य समाज इस वर्ष अपनी शताब्दी मना रहा है। जिन कर्मठ निस्वार्थ सेवकों ने १०० वर्ष तक अपने समाज को जागरूक रखा, हम उनके प्रति नतमस्तक हैं। जिन दान दाताओं ने शारीरिक, बौद्धिक और आर्थिक दान देकर इस समाज को प्रबल बनाया है। उनके प्रति हम आभारी हैं। आज के युवक-युवतियों को उन तपस्वी जनों से प्रेरणा प्राप्त करनी चाहिए, ताकि वे प्रेरित होकर दीर्घकाल तक अपने समाज को जीवित रख सके।

आज से १०० वर्ष पूर्व जिन आर्य सदस्यों ने नुवेल-देकुवेर्त गाँव में आर्य समाज की स्थापना की थी, उनके प्रति हम सदा आभारी रहेंगे। नुवेल-देकुवेर्त में स्थित आर्य समाज का इतिहास परखने से यह ज्ञात होता है कि इस शतायु समाज के उत्थान में घूरा, प्रभु, विसुनाथ, जोखू बिसेसर आदि परिवारों ने बड़ा ही सराहनीय कार्य किया है। स्वर्गीय महेश घूरा जी ने जमीन दान देकर मंदिर बनाने में अपना पूरा सहयोग दिया था। उनके अन्य सहयोगियों ने वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार, यज्ञ महायज्ञों के अनुष्ठान में योगदान दिया। हिन्दी के शिक्षण में अच्छी व्यवस्थाएँ की, जिन कारणों से वहाँ पर हिन्दी के प्रसार में अद्वितीय कार्य हो पाता है।

यह बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आर्य समाज की ओर से मॉरीशस में प्रथम गुरुकुल की स्थापना नुवेल-देकुवेर्त में हुई थी। जहाँ पर हमारे देश के छात्र गण निवास करते हुए बड़े ही नियंत्रित तरीके से योग-साधना, ध्यान, व्यायाम करते थे। शिष्ट व्यवहारों का ज्ञान प्राप्त करते थे। प्राचीन वैदिक पद्धति के अनुकूल शिक्षा भी ग्रहण करते थे। उस गुरुकुल को चलाने में भारत से आचार्य बालमुकुन्द द्विवेदी जी को बुलाया गया था, जो बड़े ही निस्वार्थ भाव से तन्मयता पूर्वक गुरुकुल की गतिविधियों का आयोजन करते थे। यद्यपि आर्थिक समस्या के कारण चन्द समय बाद गुरुकुल बन्द हो गया फिर भी हमारे गरीब छात्रों को वहाँ पर जो ज्ञान प्राप्त हुआ वह अकथनीय है। उस गुरुकुल की स्थापना से नुवेल-देकुवेर्त आर्य समाज का नाम रोशन हो गया और आज अपनी शताब्दी मनाता हुआ आर्य परिवारों में अपनी धाक जमा रहा है।

मोका प्रान्त में नुवेल-देकुवेर्त आर्य समाज एक गतिशील समाज है। पुरुष समाज के साथ ही महिला समाज अपनी गतिविधियों में सक्रिय है। युवावर्ग और छात्रों के लिए भी निरंतर गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। इस समाज में नित्य साप्ताहिक सत्संग, यज्ञ, महायज्ञों का आयोजन होता रहता है। योग एवं संगीत की कक्षाएँ भी चलती हैं। पाठशाला में हिन्दी की पढ़ाई सुचारू रूप से होती है, साथ ही पंडित-पंडिताओं द्वारा वेद मन्त्रों का अभ्यास भी कराया जाता है। समाज की गतिविधियों से बच्चे, जवान, वयस्क तथा वृध्दजन सभी लोग लाभ उठाते हैं। इसी प्रकार स्वामी दयानन्द जी की विचार-धारा को घर-घर पहुँचाने में यह समाज १०० वर्ष तक अद्भुत कार्य करता रहा।

आर्य सभा एवं मोका आर्य ज़िला परिषद् तथा सभी आर्य बन्धुओं की ओर से सभी समाज संचालकों को कोटि-कोटि बधाई! हम परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि जिस प्रकार मोका प्रान्त में मुड़िया पहाड़ सिर ताने खड़ा है, उसी प्रकार नुवेल-देकुवेर्त आर्य समाज आदिकाल से दीर्घकाल तक अपना सिर ऊँचा रखेगा और इस देश में इसकी जय जयकार हो !

CPE Results 2014

PCK Aryan Vedic School, Vacoas

Roll of CPE Candidates	: 183
Number of Candidates Passed	: 179
Percentage Passed	: 97.8%
Percentage Passed in Hindi	: 88.2%
National Colleges	: 74
Q.E.C.	: 16
Maurice Cure	: 13
R.C.C.	: 10
R.C.P.L.	: 5
Gaetan Raynal	: 3
Forest Side SSS	: 9
France Boyer	: 1
M.G.I. Moka	: 6
S.A.R.O.	: 10
St. Esprit	: 9
J. Kennedy	: 1

Ramsaroop Ramgutty Aryan Vedic School, Laventure

Roll of CPE Candidates	: 55
No. of Candidates Passed	: 49
Percentage Passed	: 89.1%
Percentage Passed in Hindi	: 85.5%
National Colleges	: 12
R.C.C.	: 1
R.C.P.L.	: 1
Maurice Cure	: 1
Droopnath Ramphul	: 4
Leckraz Teeluck	: 3
Piton S.S.S.	: 2

चारु वदानि पितरः संगतेषु ।

(अथर्व ७.१२.१)

हे ज्ञानी सदस्यों ! मैं सभा में उत्कृष्ट भाषण दूँ ।

सामाजिक गतिविधियाँ

एस. प्रीतम

हेरमिताज आर्य समाज की स्थापना हुए आधी शती गुज़र गई। इस ५ वीं वर्षगाँठ को समारोह पूर्वक मनाने के लिए वहाँ की शाखा-समाज की अन्तरंग समिति ने तृदिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया जो शुक्रवार ता० १४ नवम्बर शनिवार ता० १५ नवम्बर से रविवार ता० १६ तक चला।

शुक्रवार ता० १४ नवम्बर २०१४ को कार्यक्रम का आरम्भ ध्वजोतोलन से हुआ और ६.०० बजे शाम को जलपान से समाप्त हुआ।

अगले दिन शनिवार को दो यज्ञ रखे गये थे सुबह ९.०० से ३.०० बजे तक पुस्तकों की बिक्री प्रदर्शिनी लगी थी। बीच-बीच में स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यक्रम रखे गये थे जिसके अन्तर्गत डॉ० अग्रवाल नेत्र अस्पताल द्वारा मुआय ने किये गये और स्वास्थ्य-परीक्षण (medical check up) किया गया।

दोपहर के सत्र में बच्चों के कार्यक्रमों के साथ प्रो० सुदर्शन जगेसर, रविन गौड और सत्यदेव प्रीतम द्वारा भाषण हुए। कार्यक्रम की समाप्ति लम्बे समय तक निस्वार्थ सेवा करने वाली चन्द महिलाओं को सम्मान से की गयी और बच्चों को पमाण-पत्र और पुरस्कार प्रदान किये गये।

रविवार दि० १६ नवम्बर को हिन्दी स्कूल का वार्षिकोत्सव रखा गया था जिसमें देश के राष्ट्रपति माननीय राजकेश्वर प्रयाग ने अपनी उपस्थिति देकर कार्य में चार चाँद लगा दिये। आर्य सभा की ओर से प्रधान तानाकूर, मंत्री रामधनी अन्तरंग सदस्य रविन गौड आदि उपस्थित थे।

रविवार को ही हमें और दो वार्षिकोत्सवों में उपस्थिति देने का मौका मिला। पहला आले ब्रियाँ, वाक्वा की हिन्दी पाठशाला की ४१ वीं वर्षगांठ और सावान प्रान्त के रिव्येर जू पोस्ट आर्य समाज के द्वारा संचालित हिन्दी स्कूल की ६१वीं वर्षगाँठ मनायी गयी।

आजकल आम चुनाव का माहोल देश भर में छाया हुआ है इसलिए दोनों उत्सवों में मुख्य पार्टियों के उम्मीदवार उपस्थित थे। बच्चों द्वारा अति रोचक कार्यक्रम पेश किये गये जिन्हें देखकर हमें हिन्दी के प्रति उदासीन नहीं होना है। पर हमारी माँग है कि पढ़ने-लिखने के साथ घर में भी हिन्दी बोली जाए। आज हिन्दी और चीनी भाषाओं की दुनिया भर माँग हो रही है, क्योंकि २१ वीं शताब्दी उन दोनों देशों की शताब्दी मानी जा रही है। बहुत द्रूत गति से इन दो देशों की आर्थिक स्थिति बढ़ रही है।

श्रद्धांजलि यज्ञ

२१ सितम्बर २०१ ४ रविवार का दिन था। सूर्यप्रकाश का सब से लम्बा और अन्तिम रविवार था। वह सुबह उठा और अपने रविवारीय दिवस को शुरू किया। पहले गाँव की सब्ज़ी मंडी गया। सब से मिला और अन्तिम नमस्ते की। उसे क्या मालूम था कि वह अन्तिम वार बाज़ार गया था। वहाँ से लौटा और सुयाक गया जहाँ एक कार्यक्रम में भाग लिया। वहाँ से लौट कर आया और वरिष्ठ नागरिकों की एक बैठक में भाग लिया। फिर रविवार को वह विरले ही बालगोबिन्द आश्रम जाता था। पर उस रोज उसकी मौत उसे बुला रही थी। देर से आश्रम पहुँचा और आश्रितों और उपस्थित कर्मचारियों से मिलने के पन्द्रह मिनट बाद रास्ता टपकर ज्योंही बस अड्डे पर पहुँच पाया था कि प्राण पखेरू उड़ गये। पिंजड़ा पड़ा रहा जिसे अस्पताल ले जाया गया। मुझे फोन द्वारा मालूम किया गया पर जब घटना स्थल पर पहुँचा तो बहुत देर हो चुकी थी।

उसकी स्मृति में आर्य सभा ने प्लेन विलियेमस आर्य ज़िला परिषद और बालगोबिन आश्रम कमिटि के सहयोग से रविवार ता० २३.११.१४ को प्रातः१०.०० बजे से १२.०० बजे तक श्रद्धांजलि यज्ञ की व्यवस्था की थी। तोरल जी के तीनों भाई, बेटे, बेटी, जमाई व, पुत्र वधु उसकी धरम पत्नी, परिवार के सभी सदस्यों के साथ उपस्थित थे। आर्य सभा के मान्य प्रधान डाक्टर रुद्रसेन निऊर, सभा उपप्रधान डाक्टर गंगू, सत्यदेव प्रीतम, महा मंत्री हरिदेव रामधोनी, अंतरंग सदस्य -रविन गौड, राजेन रामजी, गिरजानन्द तिलक और श्रीमती पुचुआ कार्य में भाग लेने आये थे।

सर्वप्रथम बालगोबिन आश्रम की पुरोहिता पुणम ने साथियों के साथ मिलकर यज्ञ किया और यज्ञ के तुरन्त बाद एक सुन्दर भजन गाया और सभी ने साथ दिया। भजन का बोल था, "छोड़कर अपना घर, वे नगर सब को जाना पड़ेगा" बहुत उपयुक्त भजन था मौके के लिए। फिर उन के किये गये कामों की सराहना करते हुए बालगोबिन आश्रम कमिटी के प्रधान सत्यदेव प्रीतम जी ने कहा कि सूर्य प्रकाश ने कर्म के क्षेत्र में काम करते हुए दयानन्द के वीर-सैनिक की तरह प्राण त्याग दिये। फिर सभा का प्रतिनिधित्व करते हुए भावभीनी भावना प्रकट की। आदमी आता है जीवन में कर्म करने के लिए। वही रह जाते हैं। जो अच्छे काम छोड़ जाते हैं। महामंत्री ने लम्बे समय तक सूर्य प्रकाश के साथ काम करते हुए उन से बहुत कुछ सीखा। परिवार की ओर से प्रो० तोरल ने सभा और सभी लोगों को धन्यवाद दिया। कहा कि अगर आप लोग मौका नहीं देते तो कुछ नहीं कर सकता बड़े भाई सूर्यप्रकाश।

अन्त में परिषद् के प्रधान रविन गौड ने कार्य की सफलता के लिए सभी को धन्यवाद दिया और सूर्यप्रकाश के बारे में चन्द शब्द कहे। परिषद् के प्रधान ने कहा कि तोरल जी रोगी होकर शैय्या में पड़ा न रहा और वीरोचित मृत्यु पायी।

श्रीमती नन्दलोल जी जो बालगोबिन आश्रम कमिटि के सदस्या है। अन्त में धन्यवाद दिया और शान्ति पाठ से पहले भोजन के मंत्र का उच्चारण करवाया क्योंकि अन्त में सभी जनों को महाप्रसाद बाँटा गया।

६१ वाँ वार्षिकोत्सव रिव्येर जु पोस्त

रविवार तिथि १६ नवम्बर २०१४ को १.०० बजे रिव्येर जु पोस्त (Rivière du Poste) आर्य समाज शाखा नं० ६३ ने अपनी हिन्दी पाठशाला का इकसठ वाँ वार्षिकोत्सव धूमधाम से वार्षिकोत्सव मनाया। मातृ सभा तथा विभिन्न शाखा समाजों के अधिकारी सदस्यों ने अपनी उपस्थिति से कार्य की शोभा बढ़ाई। मान्य अतिथि प्रोफेसर सुदर्शन जगेसर आर्य भूषण जी थे। उस रोज़ मंदिर अभिभावकों तथा उत्सुक छात्र-छात्राओं से भरा हुआ था।

सर्वप्रथम पं० ओबिलक जी दवारा यज्ञ सम्पन्न किया गया, जिसमें स्कूल के छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। इसके पश्चात् सभा के प्रधान श्री दयानन्द बेचू जी का स्वागत भाषण हुआ। फिर श्री भगवान् दास बुलाकी जी ने सभागार में उपस्थित विशेष अतिथियों का विशेष स्वागत किया। ईश्वर स्तुति से छात्रों ने अपने कार्यक्रम का श्री गणेश किया। इसके बाद योवन, नील और लक्ष नाम के छात्रों ने 'पानी तेरे कितने नाम' कविता-पाठ किया गया। फिर दीक्षिका और येशना ने 'हुआ सवेश' कविता पढ़ी।

तत्पश्चात् डा० उदय नारायण गंगू, आर्य रत्न, ने दिन के प्रातः से रात तक की पूजा-विधि से त्मेंअवगत कराया। फिर नील और रेश्मा ने 'सवारी' शीर्षक कविता तथा जयवेश और दीपा ने 'टमाटर' गीत सुनाया। फिर 'अपना घर' कविता-पाठ, यादव और श्रीयम द्वारा हुआ। इसके बाद बच्चों ने एक सुर में एक सुन्दर भजन प्रस्तुत किया और दर्शिनी, दुशिता और यशनी ने 'घड़ी' शीर्षक कविता का पठन किया। अंत ममें नुशांत और ध्रुव द्वारा 'अंगों के महत्व' पर प्रश्नोत्तर हुआ।

डॉ जयचंद लालबिहारी जी विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने भाषण में परीक्षा में उत्तीर्ण सभी छात्र-छात्राओं को बधाई देते हुए अभिभावकों से अपने बच्चों को हिंदी पढ़ने हेतु प्रोत्साहित करने की माँग की। उन्होंने प्रान्त के उम्मीदवारों की उपस्थिति में संस्कृत पढ़ाने वाले अध्यापकों को अलग से भत्ता देने की पुरजोर अपील की जैसे अरबी के जनाबों को मिलता है।

Striking Success of World Vedic Conference held in Singapore and Thailand

By Dr Indradev Bholah Indranath, Saraswat Vidya-Vachaspati

Mega Vedic Conference - a mainstream for the dissemination of Vedic knowledge in people of different countries throughtout the world. Last year in 2013 the World Vedic Conference was held in Durban, South Africa and this year it took place in two countries: in Singapore on 1st and 2nd November 2014 and in Thailand on 8th and 9th November 2014. The conference was largely attended by 71 delegates from Mauritius, over 300 delegates from India and other countries like America, Canada, Australia, Indonesia and Nepal. It was also an auspicious occasion for Singapore Arya Samaj to celebrate its 100 years of Arya Samaj Movement in Singapore.

The Arya Samaj in Singapore was founded in 1914 and this year in 2014 it marked its century anniversary and it was a divine opportunity granted to proudly host delegates from different countries of the world in its temple. The Samaj is located on the 5th storey of the building which houses D.A.V Hindi School.

A short distance from the Samaj a big tent was erected in a large ground where on 1st and 2nd November Mahayajna was held with the participation of delegates in several Hawan Kunds. The acharyas performed the yajna. A profound and religious mood overreigned. Discourses on religious aspects of the Vedas were made.

In front of the tent a large stage was erected where speeches by dignitaries were delivered and cultural programmes were presented. The President of Singapore Arya Samaj Mr Om Prakash Rai welcomed the guests. Then came the most awaited moment , the arrival of the Chief Guest to the conference Mr Inderjeetsingh, Member of Parliament of Singapore. He was accompanied by lively Bhangra dances and music which aroused eagerness and joy in the minds of MrsVijay Singh Thakur Indian High Commissioner in Singapore. The lighting of the lamps was done by the generous Dharmapal Mahasahye of India and Mrs Vijay Singh Thakur. Both the chief guests addressed the audience.

Then other by learned Arya delegates also gave their message. The delegates of every country present were honoured among whom were Messrs Balchand Tanakoor and Harrydev Ramdhony respectively President and Secretary of Mauritius Arya Sabha.

After that very attractive and thought provoking cultural programs including songs, music and dance items were presented by the lady teachers and students of D.A.V Hindi School.

Afternoon programs were held upstairs on the fifth storey of the temple where several delegates (expressed their views on several aspects) including Mr Balchand Tanakoor, Mr Harrydev Ramdhony, Mr Saytadeo Peerthum, Mrs Vijaya Kureemun from Mauritius. Mr Tanakoor talked about how the Arya Samaj of Mauritius came into existence and about how many Arya Samajs are involved in propagation of the Arya Mission. Shri Satytadeo Peerthum gave a historial aperçu and events that took place of the foundation of the Arya Samaj entrusted with further development of Mauritian identity that emerged to be a pacific co-habitation of different communities in Mauritius. Mrs Vijaya Kureemun focused her speech on Arya Samaj Movement and Swami Dayanand farsightedness for women's emancipation, rights of girls and women education and eradication of illiteracy and about the key posts occupied by the women in all spheres of life.

Pt. Shyam Daiboo in company of the well-known singer Gian Mahiputloll, Mrs Yalinee Rughoo-Yellappa, Pta. Vishwanee Hemraj and Pta. Pratima Devi Goreeba sang a song based on the theme of Arya Samaj and its achievement. The singers and others like Jhyotee Geerdhary, Mrs Padmini Ramroop too got occasions to sing on different themes. They were highly appreciated by the audience.

It is worth mentioning that in 1937 the first Prime Minister of India Pandit Jawaharlal Nehru paid a visit to the members of the Singapore Arya Samaj at their seat and had a talk with them. The Arya Samaj is running the D.A.V Hindi School which plays a significant role in teaching Hindi as a mother tongue to the children numbered actually 3,600 with a Hindi teaching staff of 320 teachers.

It is also proudly noted that the people of Indian origin occupy key posts in the government of Singapore, for example, Mr Tharman Shanmugaratinam is Deputy Prime Minister and Minister of Finance; Mrs Indranee Rajah is Senior Minister of State, Minister of law and Minister of Education and Mr Indurjeet Singh is Parliamentarian. All of them gave their messages in the Special Issue of the magazine published by Arya Samaj Singapore on the occasion of 100 years celebration of Arya Movement in Singapore and International Arya Maha Sammelan 2014.

It is striking to know that Thailand formerly known as Siam has a population of 64 millions and the city Bangkok is densely populated by 6 millions of inhabitants. The Hindu population is limited and scattered yet they have kept their Arya/Hindu religion alive. It's surprising to know that the Arya Samaj was founded in 1920 in Bangkok. Now it is in its 84 years of its existence still in progress for the dissemination of Vedic principles among the people.It is noteworthy that the Sikh community has largely contributed through their donations for the upliftment of the society which is located in two storeyed building with a spacious ground floor where the Mahayajna was performed by the chief guest Acharya Raj Singh. Our representatives Pt. Yashwantlall Chooroomooney and Mrs Chooroomooney both participated in the yajna.

Two days conference was held in Bangkok on 8th and 9th November in which several learned men and women expressed their views on Vedic Philosophy and its importance in actual situations. There is a young Thai teacher who has mastered Hindi Language. He teaches Hindi. He gave a very impressive speech in Hindi expressing his love for Hindi language. Shri Sattyadeo Peerthum centered his talk on Ved Iswarya Gyan Aur Shanti while Shri Harrydev Ramdhony talked in the context how the Vedic Culture was propagated in South-East Asia. The three representatives were honoured with garlands. Among the female speaker women we listened to Mrs Geeta Jha, Mrs Veena Arya, Gita Arya, Vijaya Luxmee, Premlata Madan and Miss Shika Sahur. The theme of the Mahila Sammelan was "Mahila ek kamjori ya Shaktishali?" Mrs Geeta Jha forcefully said that 'a woman is that power which can shake the throne'. In Yuva Sammelan it was said that it is imperative to inculcate vedic culture and vedic way of life to the new generation.

The world vedic conferences held in Singapore and Thailand verily knew a striking success.

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
Printer : BAHADOOR PRINTING LTD.
Ave. St. Vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

International Arya Maha Sammelan 2014 (Singapore) – Brief Insight

Kamal DOMAH - P.D.S.M., G.O.S.K.

"Dayanand was such a great man as has no equal in India"-
Sir Saiyad Ahmad Khan (Founder, Aligarh Muslim University).

Dual Ceremonies

The 2-day double celebrations, to mark the (1) 1st ever Arya Maha Sammelan and (2) 100th year of foundation of Arya Samaj movement in Singapore were celebrated concurrently on the 1st and 2nd November, 2014.

The opening and closing ceremonies, 'bahu-kund Yajnas', as well as cultural programmes were held in the huge, well aerated white tent put up for these purposes in the open space (field) although the major portions of the 28 or so interactive Discourses were conducted about 100 yards away on the 3rd floor of the main Arya Samaj Mandir building where food (breakfast, lunch, dinner and tea) was also served.

Theme

The Theme of the Conference was 'Vedas for Peace.'

The dictionary meaning of Shanti (Peace), as given by Monier Williams is to become calm or quiet, to cease, to become extinct. This is not what the Vedas mean, because this way, it is the peace of the dead. The vedic meaning of Shanti is Satyam (Truth) in the process of Rtam, constancy in the state of mutability, Peace and Progress in equilibrium and in the state of optimum endeavour and achievement.

Programmes

The 2-day Programmes starting at 8.00 a.m. with Yoga Sessions and Meditations and ending at 22.00 hours by Panel Discussions, were compact. There were 25 interactive Discourses given by eminent Swamis, Acharyas as well as representatives of about 12 different countries where Arya Samaj Movement is active. There were around 350 foreign delegates – maximum number being from India – around 200 – including the Top Executives of Paropkarini Sabha (Delhi) – followed by Mauritius (100 or so) – including the President (Mr. Thanakoor), Vice President (Mr. Peerthum), Secretary (Mr. Ramdhony), Presiding Pandit and many other Pandits and Samaj Members. Mr. Dharam Pal (India) donated a huge sum of money.

On both days, the last item was devoted to Panel Discussions with Questions and Answers. The Panel was led by Swamis (Devvrat, Ritaspati), Acharyas (Gyaneshwar, Raj Singh) and eminent Vedic Scholars (Dr Satish Prakash (USA), Dr. Somdev Shastri, Dr Satyapal Singh, MP (India), and Dr Satyakam Vedalankar). These discussions with Questions and Answers for an hour or so, were really enlightening. The Yoga Sessions and Meditation were under the guidance of Acharya Gyaneshwarji.

There were 3 fitting Discourses from the Mauritian side – (The President's), Secretary's and Mrs Vijaya Kureemun and a couple of well-rendered melodious, songs by Pandit D. Daiboo and his musical group. All these Presentations and songs were very well received and appreciated as evidenced by the loud applause each one received at the end. The Mauritian delegates present there were feeling particularly elated to see our Representatives projecting a positive image of Mauritius and Arya Sabha Mauritius at this International Forum.

The Secretary (Mr. H. Ramdhony) at the end of his presentation mentioned that at the conclusion of such Conferences it was important to be informed about the follow up actions being taken on the Resolutions taken earlier. Thereupon Mr Vinaye Arya (Secretary, Paropkarini Sabha, Delhi), upon his request, was unanimously given an hour after the day's programme to shed light on this query.

Opening/Closing and Cultural Programmes

The Opening Ceremony was performed by Hon. Inderjit Singh MP and after his thought - provoking speech there followed a cultural programme by Professional Artists, DAV Students, Parents and Local Invited Organisations.

On the other hand, the Closing Ceremony was officiated by Ms Vijay Thakur Singh (High Commissioner of India), again followed by a memorable and enchanting musical programme joyfully and elegantly executed by DAV girl students, lady Teachers and Officials.

The musical cultural programme including group songs and dances were very colourful, energetic and of a high standard.

These official Opening, Closing and Cultural Items, were aptly presented each time by 2 different charming Ladies with appropriate lively and smart comments. The elders stayed purposely in the background and Young Wing (Boys and Girls) given a chance to project themselves with additional responsibilities. (To be noted)?

At the end, Mr. Om Prakash Rai (President) thanked everybody warmly for their support and help in making the Dual Celebrations a success. Arya Samaj Singapore should be congratulated warmly for the way the various activities ran smoothly with resounding success with the help of the various Indian Cultural Organisations.

DAV Colleges (Singapore)

The DAV Colleges have an actual student population of around 3,600 and, for the 2012 cohort, at the
(1) Primary School Leaving Examination,
(2) O.L/SC and
(3) A Level/HSC Examinations, obtained 100% passes. Bravo!

Conclusion

Presently, there is a war of thoughts. Those that will ultimately come to stay will be the ones that are (1) not Self-Centered, (2) Not Closed but.,(3) Open for Discussions and (4) Universal in appeal.

The God-revealed religio-philosophical thoughts enshrined in the Vedas have not been excelled by any later thoughts – Eastern or Western – in (1) elegance (2) subtlety and (3) power to inspire.

Who will continue to feed oil in the already lit pot? It is none other than Arya Samaj thanks to the visionary genius, pristine erudition, divine thoughts and selfless actions of Maharishi Veerjanand and Rishi Dayanand. All these divine qualities they acquired after profound introspection and consistent intense meditation.

It is therefore imperative for all Arya Samaj Members Zonewise, with the help of the Youth Wing to selflessly network, meet, interact, chart out solid programmes followed by concrete actions in each Zone, for the common good of all mankind. This way, the vision of Rishi Dayanand and Maharishi Veerjanand will come to fruition.

But first, - halt ! WE must ask ourselves: Are WE True Arya Samajists? - As in the light of the ten principles of Arya Samaj? If not, WE must first start by upgrading ourselves!

Only then, can others be inspired to join the Bandwagon, and forge ahead, for the common good of ALL!

Next Arya Mahasammelan 2015

Place : Sydney, Australia
Venue : Arya Samaj Centre
Dates : 23, 24 and 25 October 2015

"Ïn Dayanand's life, we see always the puissant jet of spiritual practicality. A spontaneous power and decisiveness is stamped everywhere on his work"
(Aurobindo GHOSH)